वी॰सी॰डी॰नं॰582 ऑडियो कैसेट नं॰1068

झारसुगुड़ा (उड़ीसा) मु॰25॰06॰67 ता॰26॰12॰06

अब समय आ गया है भगवान को पहचानने का

(जनरल पब्लिक पर आधारित)

माउण्ट आबू से शिवबाबा की मुरली चली है 25.6.67 की। ओम शांति, प्रातःक्लास। रिकॉर्ड चला है– मुखड़ा देख ले प्राणी ज़रा दर्पण में। दर्पण कौन–सा है? ज्ञान का भी दर्पण है, दिल का भी दर्पण कहा जाता है। दिल दर्पण में अपने पाप और पुण्य दिखाई पड़ते हैं। दिल साफ है तो दिखाई पड़ते हैं; दिल काला है, मटमैला है तो दिखाई नहीं पड़ते हैं और ज्ञान का दर्पण ऐसा है जो सिर्फ ज्ञान सागर बाप से मिलता है। ज्ञान सागर बाप दिल वाला बाप है, एक–2 की दिल लेने वाला है। देखते हैं, किसके अंदर कितना दिल है? दिल वाला बाप परमपिता परमात्मा ही है। वही एक–2 की दिल लेने वाला है। इस सृष्टि पर आते हैं तो जो भी 500–700 करोड़ मनुष्यात्मायें हैं, सबके दिल दर्पण में झाँक कर देखते हैं कि कौन कितना दिल वाला है, कौन कितना मेरे लिए अर्पण करने वाला है, कहाँ तक तन अर्पण करता है, कहाँ तक मन अर्पण करता है, कहाँ तक अपना धन अर्पण करता है, समय अर्पण करता है, संबंधियों की ताकत अर्पण करता है, सम्पर्कियों की ताकत अर्पण करता है? एक–2 की दिल को झाँक कर देखते हैं। इसलिए बोला– हे प्राण रूपी आत्मा को धारण करने वाले प्राणी! तू पहले अपने दिल–दर्पण में देख ले– कितने पाप किए हैं, कितने पुण्य किए हैं? सिर्फ एक जीवन की बात नहीं है। प्राण धारण करने वाली आत्मा अनेक जन्म ले करके पाप और पुण्य करती है। अभी बच्चे जब बैठे हैं तो सुनते हैं। अपन को आत्मा निश्चय करके बैठते हैं। मैं प्राण स्वरूप आत्मा हूँ और यह निश्चय करे कि मैं आत्मा एक परमात्मा बाप से पढ़ाई पढ़ने वाली हूँ। वह परमात्मा बाप दुनियाँ का बड़े–ते–बड़ा टीचर है, सुप्रीम टीचर कहा जाता है। वह परमपिता भी है, सुप्रीम फादर भी कहा जाता है, सुप्रीम गुरू भी है– जगतगुरू है। मनुष्य तो अपने ऊपर झूठे–2 टाइटिल रखा लेते हैं– जगतगुरू शंकराचार्य; लेकिन सारा जगत उन्हें कभी अपना गुरू नहीं मानता। भारतवर्ष के सारे लोग ही नहीं मानते जगतगुरू। एक भारत में ही ढेर के ढेर जगतगुरू टाइटिल वाले हैं, तो झूठा टाइटिल हुआ ना; लेकिन भगवान बाप जब इस सृष्टि पर आते हैं तो सारी मनुष्य सृष्टि बाध्य हो जाती है उस भगवान बाप को अपना सुप्रीम टीचर और सुप्रीम गुरू मानने के लिए; इसलिए उनको कहा जाता है– जगतगुरू। श्री–2 108 जगतगुरू– यह भगवान का टाइटिल है; कोई मनुष्य मात्र का टाइटिल नहीं है। अगर मनुष्य मात्र का टाइटिल होता तो मनुष्य को पूछा जाता– तुम कौन–से धर्म के हो? कोई कहेगा– क्रिश्चियन धर्म के हैं, कोई कहेगा– बौद्ध धर्म के हैं, कोई कहेगा– हिंदू धर्म के हैं, कोई कहेगा– मुस्लिम धर्म के हैं। अगर मुस्लिम धर्म के हो तो तुम्हारा धर्मपिता कौन है, कब से मुस्लिम धर्म चला आया? कहेंगे– 1400 वर्ष पूर्व मोहम्मद आए, तब से मुस्लिम धर्म चला। उससे पहले हमारी वंश परम्परा इस्लामी थी। इब्राहीम आए, उनसे इस्लाम धर्म चला। तो इस्लाम धर्म तो इस्लाम धर्म–खंडों में फैला हुआ है– अरब देश, मिस्त्र, अफ्रीका वगैरह–2। मुस्लिम धर्म मुस्लिम देशों में फैला हुआ है– इरान, इराक, अफगानिस्थान, तुर्किस्थान वगैरह–2। कोई यह नहीं कहेगा कि हमारा धर्मपिता जगत का गुरू है। उनकी सीमा ही अपने–2 धर्मखंडों तक है, कोई भी धर्म का क्यों न हो; लेकिन परमपिता परमात्मा सारे जगत का प्रैक्टिकल में गुरू बन कर जाता है, उसका नाम है– परमपिता परमात्मा शिव। शिव नाम इसलिए है कि सारे संसार का कल्याण करता है। एक भी मनुष्य मात्र आत्मा ऐसी नहीं रहती जो यह स्वीकार न करे कि उसने हमारा कल्याण नहीं किया। सब एहसास करके जाते हैं, अनुभव करके जाते हैं– इस दुनियाँ में जितना गॉड फादर हमारा कल्याणकारी है, परमपिता जितना कल्याणकारी है, उतना कल्याण और कोई नहीं कर सकता। कल्याण कैसे करते हैं? निराकार रूप में करते हैं या साकार बन कर कल्याण करते हैं? (किसी ने कहा– साकार बनकर) निराकार तो इन आँखों से देखने (में) ही नहीं आता है। पंडित–आचार्यों ने कह दिया है– **बिनु पग चले, सुने बिनु काना।** बिना पाँव के चलता है, बिना कान के सुनता है, बिना आँख के देखता है; लेकिन उनसे कहा जाए, कैसे? तो बताए नहीं सकते; लेकिन शास्त्रों में ही, दूसरे मनुष्य गुरुओं ने जो गीता लिखी है, उन्होंने लिख दिया है– **"प्रवेष्टुं"(11/54),** मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। गीता में ही भगवान के महावाक्य हैं। जैसे भूत–प्रेत प्रवेश करते हैं ऐसे ही परमपिता परमात्मा भी प्रवेश तो करते हैं; लेकिन गति–मति न्यारी होती है। भूतों की तरह आत्मा को पूरा

कब्जे में करके प्रवेश नहीं करते, हावी हो करके प्रवेश नहीं करते, जैसे भूत–प्रेत प्रवेश करते हैं तो जिसमें प्रवेश होता है वह अपनी सुध–बुध भूल जाता है, चेहरा–मोहरा बदल जाता है, भाषा बदल जाती है, दृष्टि बदल जाती है। ऐसी प्रवेशता परमपिता परमात्मा की नहीं होती; वह दिव्य प्रवेश करता है। जिसमें प्रवेश करता है उसको पता भी नहीं लगता– कब आया और कब चला गया। बाद में मालूम पड़ता है कि ऐसी भाषा तो मैं बोल ही नहीं सकता था, ऐसी दृष्टि तो मेरी कभी किसी के प्रति हुई ही नहीं, ऐसा वायब्रेशन का अनुभव मैंने किया ही नहीं था। वह दिव्य प्रवेश करता है। दिव्य प्रवेश अर्थात् कोई को पता ही नहीं चलता– कब आया, कब चला गया। लोग कहते हैं कि भगवान आकर ब्रह्मा के मुख से वेद वाणी बोलता है। वेदों से ही सब शास्त्रों का सृजन हुआ। विद् धातु से वेद बनता है। विद् माना जानकारी। वेद माना जानकारी का भंडार, जैसे ज्ञान का सागर हो; परंतु उस वेद की भाषा को सब नहीं जान सकते। स्वयं ब्रह्मा, जिसके मुख से वह वेद वाणी निकलती है, जिसके तन में वह निराकार शिव ज्योतिबिंदु प्रवेश करता है, उसको पता भी नहीं चलता– कब आया, कब चला गया और जो भाषा बोली, उसका गहराई तक अर्थ क्या है। ब्रह्मा का अर्थ ही है– बड़ी माँ। ब्रह्ं माना बड़ी और मा माना माँ। संसार की बड़े ते बड़ी माँ। ऐसी माँ कि उतना प्यार, उतनी सहनशीलता दुनिया में कोई और माता ने धारण नहीं की होगी। कोई खोट नहीं सहनशीलता में, प्यार में कोई कमी नहीं। कोई पच्छड़माल भी सामने पहुँचा होगा, 10 सेकेण्ड, 10 मिनिट के लिए ही क्यों न पहुँचा हो, (किसी ने पूछा– बाबा, पछड़माल माने) पछड़माल माने मार–पीठ करने वाले, जानवरों को खाने वाले, हत्या करने वाले, नीच कर्म करने वाले। ऐसी आत्मा भी जब सामने पहुँचती है तो अनुभव करती है जितना ब्रह्मा ने हमको प्यार दिया उतना दुनिया में कोई ने नहीं दिया। आज ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सारे विश्व के कोने–2 में फैला हुआ है। भारतवर्ष के गाँव–2 में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय फैला हुआ है और उस विश्व विद्यालय में पढ़ाई पढ़ाने वाले जो पुराने–2 वर्तमान टीचर्स हैं, गारंटी है कि एक भी यह अनुभव नहीं बताते कि बाबा ने हमको तुर्श(तीखी) आँख से देखा, दुर्वचन बोला, हमको धिक्कारा। तो ऐसे प्यार की ममतामयी मूर्ति वह निराकार परमपिता परमात्मा आ करके बनता है। किसके द्वारा बनता है? ब्रह्मा के द्वारा। तीन देवतायें प्रसिद्ध हैं। हैं तो 33 करोड़; लेकिन 3 देवताओं में ब्रह्मा, विष्णु और शंकर– ये त्रिदेव बहुत ही प्रसिद्ध हैं; क्योंकि इन तीन देवताओं के द्वारा वह निराकार इस सृष्टि पर आ करके अपना कार्य सम्पन्न कराता है। ब्रह्मा के द्वारा नई ब्राह्मणों की सृष्टि उत्पन्न करता है। आज के पंडित, विद्वान, आचार्य जैसे कहते हैं कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले, तो कोई समझे कि ब्रह्मा के मुख में कोई ऐसी मशीनरी होगी, जो ब्राह्मण बन–2 करके निकलने लगे होंगे, कुम्हार के चाक के बर्तनों की तरह। ऐसी कोई बात नहीं। ब्रह्मा के मुख से जो प्यार बरसा, दृष्टि से जो स्नेह बरसा और वाचा से जो प्यार भरी वाणी निकली, उस वाणी के बंधन में आकर ढेर सारी आत्माएँ अपने शूद्रत्व के स्वभाव को त्याग कर ब्राह्मण बन गईं। ब्रह्मा की औलाद को ब्राह्मण कहा जाता है। जैसे शिव के फॉलोअर शैव, विष्णु के फॉलोअर वैष्णव, ऐसे ही ब्रह्मा के पुत्र ब्राह्मण कहे जाते हैं। प्रैक्टिकल बातें हैं। जो ज्ञान को सुन कर अपने जीवन को पलट लेते हैं और दूसरों को ज्ञान सुना कर उनके जीवन को पलटाते हैं। ब्राह्मणों का काम ही होता है ज्ञान सुनना और दूसरों को ज्ञान सुनाना। जीवन का दूसरा कोई लक्ष्य नहीं होता। ऐसे ब्राह्मणों की सृष्टि ब्रह्मा के द्वारा रची जाती है; परंतु जो भी ब्राह्मणों की सृष्टि ब्रह्मा के द्वारा रची जाती है, वे सारे ही ब्राह्मण एक ही कैटेगिरी के होंगे या जैसे घर–परिवार में माँ से बच्चे पैदा होते हैं तो अलग–2 कैटेगिरी के होते हैं? (किसी ने कहा– अलग–2) एक प्रकार के बच्चे नहीं हो सकते। नम्बरवार ब्राह्मण बच्चों की पैदाइश होती है। वे ब्राह्मण यह प्रारब्ध कहाँ से लाते हैं जो ब्रह्मा के बच्चे बनते हैं नम्बरवार? कोई पहले बच्चा बनता है, कोई मध्य में बच्चा बनता है, कोई अंत में बच्चा बनता है। यह प्रारब्ध कहाँ से लाते हैं? कहीं से तो लाए होंगे! पूर्वजन्मों (में) जो कर्म किए हुए हैं, उनके आधार पर ही ब्रह्मा के बच्चे बनते हैं। पूर्वजन्मों में जिन आत्माओं ने, चाहे वे किसी भी धर्म की क्यों न हुई हों, हर धर्म में अच्छे और बुरे होते हैं, जिन्होंने अच्छे–2 कर्म किए, वे अच्छे–2 कर्म करने वाली श्रेष्ठ आत्माएँ, चारों युगों का जब अंत होता है, कलियुग का अंत, उस अंतिम जन्म में जबकि दुनियाँ का संघार करने के लिए ऐटम बम्ब बन जाते हैं, ठीक उसी समय वे ब्राह्मण आत्माएँ, ब्रह्मा की औलाद आ करके बनती हैं। क्या शरीर से औलाद बनती हैं? नहीं। भारतवर्ष में ही आ करके उनका जन्म होता है। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर ऐसा ड्रामा नूँधा हुआ है कि आखिरी जन्म में विश्व के कोने–2 में जन्म लेने वाली श्रेष्ठ आत्माएँ, कोई भी धर्म की हों, कोई भी धर्मखंड की हों, अंतिम जन्म में आ करके भारत में जन्म लेती हैं और उन जन्म लेने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को ब्रह्मा के द्वारा पालना मिलती है; परंतु वे एक धर्म की तो हैं नहीं। कोई शुद्ध वैष्णव धर्म से आती हैं, सनातन धर्म की हैं, कोई इस्लाम धर्म में से खिंच करके आती हैं, कोई बौद्धी धर्म से खिंच करके आती हैं, कोई संन्यास धर्म से खिंच करके आती हैं, कोई सिक्ख और आर्यसमाजियों में से खिंच करके आती हैं। तो सोचा जाए कि

अलग–2 धर्मों से खिंच करके जो भी आत्माएँ आयी हैं, अंतिम जन्म में ब्रह्मा की औलाद बनती हैं या ब्रह्मा मुखवंशावली अपने को घोषित करती हैं (किसी ने कहा– वे नास्तिक वाली ब्राह्मण बनती हैं?) उनका बनना, न बनना बराबर है। नास्तिक कोई धर्म नहीं होता है; क्योंकि उनमें धारणा नहीं होती है। उनको कितना भी ज्ञान सुनाया जाए, उनको जो करना है सो करेंगे। एक कान से सुनेंगे, दूसरे कान से निकाल देंगे। ज्ञान को धारण नहीं कर सकते, ब्राह्मणत्व के गुणों को धारण नहीं कर सकते। उनकी बात छोड़ दीजिए। तो दुनियाँ में छोटे–बड़े धर्म और मठ–पंथ मिला करके 9 धर्म हैं। प्राचीन काल में हिंदू ही सूर्यवंशी–चंद्रवंशी थे। गीता में आया है कि मैं जब आकर इस सृष्टि पर ज्ञान सुनाता हूँ तो पहले–2 सूर्य को सुनाता हूँ। सूर्य से जो डायरैक्ट सुनने वाले होते हैं वे सूर्यवंशी कहे जाते हैं, फिर चंद्रवंशी, फिर आज से ढाई हज़ार साल पहले इब्राहीम से पैदा हुए इस्लाम वंशी, फिर बौद्धी वंशी, क्रिश्चियन वंशी, संन्यास वंशी, मुस्लिम वंशी, सिक्ख वंशी, आर्यसमाजी और लास्ट में ऐटम बम्ब बनाने वाले नास्तिक। इन दसों से खिंच करके आयी हुईं आत्माएँ, नम्बरवार ब्रह्मा के ज्ञान को सुनती हैं और नम्बरवार धारणा करती हैं। उन ब्राह्मणों के आधार पर ही आज जो हज़ारों वर्षों से भारतवर्ष में भक्तिमार्ग चला आ रहा है, मनुष्य गुरुओं के द्वारा फैलाया हुआ, उसमें ब्राह्मणों की नौ कुरियाँ मानी जाती हैं। कहते हैं कि नौ ऋषि हुए थे। उन ऋषियों से यह सृष्टि उत्पन्न हुई। नौ प्रकार के ब्राह्मण बने। वास्तव में कलियुग के अंत में ब्रह्मा के तन में परमात्मा शिव जब प्रवेश करते हैं तो ये नौ धर्म की खिंची हुईं आत्माओं में से जो नौ श्रेष्ठ निकलते हैं, उन नौ ऋषियों से यह सारी सृष्टि तैयार होती है, जिनको भक्तिमार्ग में नौ कुरी का ब्राह्मण कहा जाता है। अभी यह सृष्टि तैयार हो रही है। उन तैयार होने वालों में श्रेष्ठ वे हैं जो डायरेक्ट सूर्य की औलाद हैं। अब डायरेक्ट सूर्य कौन है, चंद्र कौन है, पृथ्वी कौन है? क्योंकि पृथ्वी को माता कहा जाता है शास्त्रों में– धरणी माता। माता के ऊपर जब बहुत दुःख बढ़ जाता है तो कहते हैं भगवान आते हैं। वह कौन–सा युग है जब धरणी माता, पृथ्वी माता के ऊपर बहुत दुःख का बोझ बढ़ जाता है, बहुत पाप बढ़ जाते हैं? (किसी ने कहा– कलियुग–अंत) पापी युग कलियुगी कहा जाता है। तो माताओं का दुःख हरण करने के लिए भगवान को आना पड़ता है। माताएँ जितनी बंधन में होती हैं उतना और कोई बंधन में नहीं, खास भारत की माताएँ। भारत में ही भगवान आते हैं। कोई प्रश्न करे– भगवान भारत में ही क्यों आते हैं? भगवान क्यों पार्श्यालिटी करते हैं? ऐसा पक्षपात क्यों करते हैं? पक्षपात नहीं करते। हरेक पिता अपनी श्रेष्ठ संतान को वारिसदार बनाता है, हरेक टीचर अपने योग्य शिष्य को, योग्य विद्यार्थी को मॉनीटर बनाता है और हरेक गुरू अपने अच्छे–से–अच्छे शिष्य को अपनी गद्दी सौंपता है। ऐसे ही भगवान भी जब इस सृष्टि पर आता है तो जो श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, उनका चयन करता है नवग्रहों के रूप में। वे तो आसमान के जड़ ग्रह हैं, उनमें सोचने–विचारने की शक्ति नहीं हैं। वह तो परसॉनिफिकेशन किया हुआ है शास्त्रों में– बुध देव, मंगल देव, सोम देव, शुक्राचार्य, शनिदेव। वह परसॉनिफिकेशन मनुष्य की जड़ बुद्धि ने जड़ ग्रहों के ऊपर समझ लिया। वास्तव में मनुष्य जाति में ही वे नौ श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, जिनको भगवान पहचानता है, उनको चुनता है, पढ़ाई पढ़ाता है, पालना देता है, सृष्टि का नियंता बनने के लिए आगे बढ़ाता है। अभी वह अव्वल नंबर धरणी का पार्ट बजाने वाली माता कौन है, जिसे जगतमाता, जगदम्बा कहा जाता है? सारी धरणी में श्रेष्ठ देश कौन–सा है? (किसी ने कहा– भारत) जिसे भारत माता कहा जाता है। भारत माता भी मनुष्य सृष्टि में मौजूद है। कहते हैं, भारत माता की जय हो। तो क्या जड़ ज़मीन की जय हो? जड़ ज़मीन की बात नहीं है। सूर्य देव कहते हैं। सूर्य के चारों ओर नवग्रह चक्कर लगाते हैं, चक्कर काटते हैं। सारी दुनियाँ भगवान के आस–पास चक्कर काटती है। मनुष्यों की यह अवधारणा थी, शास्त्रों में लिखा हुआ है कि चंद्रमा पर देवतायें निवास करते हैं, चंद्रमा में अमृत है। मनुष्यों ने भी सन् 69 में चंद्रमा पर पहुँचने की कोशिश की और पहुँच गए; लेकिन जड़ चंद्रमा तक पहुँचे या चैतन्य चंद्र देव तक पहुँचे? जड़ चंद्रमा तक पहुँचे। तो क्या मिला? (किसी ने कहा– मृत्यु) कुछ मिला या वेस्टेज़ ऑफ टाइम, मनी और एनर्जी हुई? क्योंकि मनुष्यों की पढ़ाई पढ़ी, उसके आधार पर वेस्टेज़ ऑफ टाइम, मनी और एनर्जी किया; मिला कुछ नहीं। अभी भगवान जो पढ़ाई पढ़ाते हैं उस पढ़ाई के आधार पर ज्ञान चंद्रमा, चंद्र देव को कोई पहचान सकता है। भारतीय परम्परा में कहा जाता है– कृष्ण चंद। कितनी कला सम्पूर्ण थे? 16 कला सम्पूर्ण। वह जड़ चंद्रमा में भी सोलह दिन स्थूल रोशनी आती है। पंद्रह–सोलह दिन घटता है, पंद्रह–सोलह दिन बढ़ता है। उसके मानिंद(तरह) कृष्ण की आत्मा है। ऐसे ही सूर्यवंशी विशेष आत्मा भारत में कौन–सी मानी जाती है? एक आत्मा का नाम चाहिए। (किसी ने कहा– राम) राम को कहते हैं सूर्यवंशी, मर्यादा पुरुषोत्तम; परंतु उनको 14 कलाओं में डाल दिया है। अरे, सूर्यवंशी राम है तो सूर्य कौन हुआ? कोई तो हुआ होगा? उस सूर्य की हिस्ट्री किसी को पता नहीं है; क्योंकि राम को 14 कला त्रेता में डाला हुआ है। किसी को पता ही नहीं है कि राम सृष्टि के आदि में थे, सतयुग के आदि में, उनकी 16 कला सम्पूर्ण से भी ऊँची स्टेज

थी, कलातीत थे; इसलिए शास्त्रों में गाया हुआ है– कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सारी सृष्टि का कल्याण करने वाला है, सारे कल्प का अंत करने वाला है। कल्प माना चतुर्युगी। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग– चार सीन हैं इस ड्रामा के। चारों सीन का जब अंत होता है तो निमित्त बनती है राम की आत्मा। कौन है राम की आत्मा जो निमित्त बनती है? उसके लिए भी शास्त्रों में तो बताए दिया है; लेकिन फिर पूरा अर्थ नहीं समझते। शास्त्रों में बताया हुआ है **"शिव द्रोही मम दास कहावा सो नर सपनेहु मोहि न पावा",** जो शिव का द्रोही है वह मेरे को प्राप्त नहीं कर सकता। वास्तव में जो शिव है, वही निराकार शिव राम में प्रवेश करता है। जो सतयुग के आदि में 16 कला सम्पूर्ण कृष्ण की आत्मा बनती है, नारायण के रूप में राज्य करती है–गायन है– **"हे कृष्ण नारायण वासुदेव"**–वह 16 कला सम्पूर्ण बनने वाली कृष्ण की आत्मा जो सतयुग के आदि में नारायण वही 84 के चक्र में आते–2 अंतिम जन्म में आ करके कलाहीन हो जाती है और उस कलाहीन में भगवान शिव प्रवेश करते हैं। प्रवेश करके हम आत्माओं को माँ के रूप में प्यार देते हैं। ऐसे नहीं कि राम–कृष्ण की आत्मा के पूर्वजन्म नहीं हुए हैं। पूर्वजन्मों में भी राम–कृष्ण की आत्मा थीं, हम लोगों के साथ ही थीं; लेकिन कोई पहचान नहीं सकता; क्योंकि नाम–रूप बदल जाता है। मनुष्य–आत्माएँ अपना नया जन्म लेने के बाद पूर्वजन्म की बातें भूल जाती हैं; लेकिन परमपिता परमात्मा शिव जन्म–मरण के चक्र से न्यारा है। उस चक्र में न आने के कारण उसको इस सारी सृष्टि–चक्र का ज्ञान है। वह कभी भूलता नहीं है, वह सदैव स्मृति स्वरूप है, सदैव आत्मिक स्थिति में रहने वाला है। देह का जन्म, गर्भ का जन्म लेता ही नहीं, तो उसको कभी भी देहभान आता ही नहीं; इसलिए उसको सदाशिव कहा जाता है। जो सदा रूहानियत में रहने वाला है, आत्मिक स्थिति में रहने वाला है, उसके नीचे गिरने का कभी सवाल ही नहीं। वह अच्युत है, वह सदैव ऊँची स्टेज में रहने वाला है। कौन–सी ऊँची स्टेज? जो गीता में भी लिखी हुई है, मनुष्य गुरुओं ने लिखी भी है; लेकिन गलती के कारण बुद्धि भ्रमित हो जाती है, विकारी बुद्धि है, कामी, क्रोधी बुद्धि है; इसलिए फिर भगवान को सर्वव्यापी भी कह दिया। गीता में ही श्लोक भी लिखा हुआ है। मैं कहाँ का रहने वाला हूँ? भगवान खुद बताते हैं **"न तद् भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः। यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम।।" (गीता 15/6)** जहाँ न सूर्य, चाँद, सितारों का प्रकाश पहुँचता है, इतना परे का धाम है, वहाँ का मैं रहने वाला हूँ। जहाँ जा करके आत्माएँ फिर वापस इस कलियुगी पापी दुनियाँ में नहीं लौटतीं, वह मेरा परमधाम है। गीता में स्पष्ट बोला हुआ है और गीता दुनियाँ का सर्वोपरि ग्रंथ माना जाता है ज्ञान का। सर्वशास्त्र शिरोमणि कही जाती है गीता। है तो मनुष्यों की लिखी हुई। कोई भी धर्मपिता आ करके अपने हाथों से धर्मग्रंथ नहीं लिखते हैं। मोहम्मद ने कुरान नहीं लिखी, महात्मा बुद्ध ने धम्मपद नहीं लिखा, क्राइस्ट ने बाइबिल नहीं लिखी, गुरूनानक ने गुरू ग्रंथ साहब नहीं लिखा। धर्मपितायें धर्म स्थापना करने के लिए आते हैं तो मुख से डायरेक्ट बोलते हैं, मुख से बोल करके सुनावेंगे या किताब में बैठ कर लिखेंगे? (किसी ने कहा– सुनावेंगे) हज़ारों वर्ष पहले क्या कागज़ होता था? (किसी ने कहा– नहीं) ढाई हज़ार वर्ष से पुराना कोई भोजपत्र भी नहीं मिलता। भोजपत्र, जिनके ऊपर शास्त्र लिखे हुए हैं। तो सब धर्मपिताओं की तो ढाई हज़ार वर्ष की हिस्ट्री मिलती है। भगवान कब आया, वह तो हिस्ट्री भी किसी के पास नहीं है। तो क्या भगवान कागज़ पर बैठ कर लिखेगा? वह भी आ करके बोलता है। ब्रह्मा के मुख में आ करके बोलता है। इतनी मीठी भाषा बोलता है जैसे बच्चे को माँ लोरी सुनाती है। मीठी नींद में सुलाय देती है, ऐसी ज्ञान की लोरी सुनाता है। उस मीठी वाणी का नाम शास्त्रों में मनुष्यों ने दे रखा है– कृष्ण की बाँसुरी; क्योंकि कृष्ण के अंतिम जन्म के चोले में वह निराकार प्रवेश करता है और मीठी वाणी सुनाता है। माँ के रूप में प्यार देता है, वात्सल्य देता है, सौम्य पार्ट बजाता है, प्यार भरा पार्ट बजाता है। जैसे छोटे बच्चों को मातायें प्यार देती हैं। बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो माता के कंट्रोल से बाहर हो जाते हैं; बाप उनको कण्ट्रोल करता है। ऐसे ही ये राम–कृष्ण की आत्माएँ इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर निमित्त रूप में मात–पिता का पार्ट बजाने के लिए नूँधी हुई हैं। इसलिए कहा जाता है राम बाप और कृष्ण को बच्चे के रूप में पूजा जाता है। राम के बड़े रूप की पूजा होती है और कृष्ण बच्चे के रूप में पूजा जाता है; क्योंकि राम के अंतिम जन्म में परमात्मा शिव प्रवेश करके शंकर नाम–रूप से प्रत्यक्ष होते हैं। इसलिए वह शंकर बच्चा ही बोलता है, राम के रूप में रामायण में बोला है **"शिव द्रोही मम दास कहावा सो नर सपनेहु मोहि न पावा",** क्यों? क्योंकि शंकर शिव का बच्चा है। लोग समझते हैं शिव–शंकर एक ही है। अरे, एक ही है तो दो नाम क्यों हैं और उन दो नामों के ऑपोजिट अर्थ क्यों हैं? शिव माना कल्याणकारी और शंकर माना संघारकारी। कहाँ कल्याण करने वाला और कहाँ सृष्टि का संघार करने वाला। कल्याण करने में सुख होता है या संघार करने से सुख होता है? कल्याण करने से सुख होता है। इसलिए शिव सदैव कल्याणकारी है, वह जन्म–मरण के चक्र में आने वाला ही नहीं है। वह ज्ञान सुना करके सृष्टि का कल्याण करता है, मनुष्य तन में प्रवेश करके दृष्टि से सुख देता है। कहते हैं ना– गुरू जी की कृपा–दृष्टि हो जाए। अब

ढाई हज़ार वर्षों से सृष्टि पर गुरुओं की कृपा–दृष्टि होती आई। इस सृष्टि में गुण बढ़ रहे हैं या गुण घट रहे हैं? (किसी ने कहा– बढ़ रहे हैं) दुर्गुण बढ़ रहे हैं या गुण बढ़ रहे हैं? दुर्गुण बढ़ रहे हैं। तो गुरुओं की कृपा–दृष्टि कहाँ चली गई? मनुष्य गुरुओं की कृपा–दृष्टि से यह सृष्टि नहीं सुधरती। एक ईश्वर ही ऐसा सद्गुरू है जिसकी कृपा–दृष्टि से सारी सृष्टि सुधर जाती है। उसकी वाचा से सारी मनुष्य सृष्टि परिवर्तन के लिए बाध्य हो जाती है। मनुष्य तन में आए हुए उस परमपिता परमात्मा के वायब्रेशन से सारी दुनियाँ का परिवर्तन होता है। यह ज़रूर है कि जो जितना अपना पुरुषार्थ करता है, उसका पहले और ज़्यादा परिवर्तन होता है और जो पुरुषार्थ नहीं करता, मेहनत नहीं करता, वह पीछे रह जाता; इसलिए कोई आत्माएँ तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर सतयुग के आदि से ले करके 16 कला सम्पूर्ण सुख भोगती हैं और जन्म लेते–2 कलियुग अंत तक चलती हैं, ऑलराउण्ट पार्ट बजाती हैं और कुछ आत्माएँ ऐसी हैं जो भगवान के लोक परमधाम, ब्रह्मलोक से कलियुग के अंत में ही उतरती हैं। कोई सतयुग के अंत में, कोई त्रेता के आदि में, कोई त्रेता के अंत में, कोई द्वापर के आदि में, कोई द्वापर के अंत में इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आत्माएँ उतरती ही रहती हैं। क्या प्रूफ है? (किसी ने कहा– बढ़ रहे हैं) क्योंकि जनसंख्या लगातर बढ़ती ही रहती है। मनुष्य जाति आत्माओं की ही जनसंख्या नहीं, हर प्रकार की जाति के जीव–जंतुओं की आत्माओं की संख्या बढ़ती ही रहती है। चाहे चौपाय हों, चाहे उड़ने वाले हों, चाहे दो पाय मनुष्य हों। ऐसा हिस्ट्री में कभी नहीं देखा गया कि संख्या कम हो गई हो। नहीं। ऊपर से हर जाति की आत्माएँ उतरती रहती हैं, जनसंख्या बढ़ती रहती है। जो उतर आती हैं उनको वापस जाने का रास्ता नहीं मिलता, कोई बताने वाला नहीं। **"बिन गुरू होय की ज्ञान",** बिना गुरू के गति नहीं। वापस कैसे जावेंगी? जा ही नहीं सकतीं। यह ड्रामा नूँधा हुआ है। मनुष्य आत्माएँ जो कि इस सृष्टि पर आ करके सुख भोगते–2 नीचे गिरती जाती हैं, सुख कम होता जाता है, दुःख बढ़ता जाता है, जब यह दुनियाँ रौरव नर्क बन जाती है, पुराना मकान हो जाता है, सृष्टि पुरानी हो जाती है, तो यह सृष्टि का मालिक बाप परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर फिर आता है और प्राणी मात्र के बीच, आत्माओं के बीच में जो श्रेष्ठ जाति की आत्माएँ मनुष्य जाति है, उसका उद्धार करता है। ये बिंदु–2 आत्माएँ हैं मनुष्यों की। मनुष्यों की ही नहीं; जीव–जंतु, पशु–पक्षी सबकी बिंदु रूप आत्मा। इसलिए गीता में कहा गया है, आत्मा का स्वरूप बताया गया है **"अणोरणीयांसमनुस्मरेत् यः" (गीता 8/9)।** जो ऐटम बम्ब बनता है, उसका जो छोटा–सा ऐटम होता है, उस ऐटम से भी अति सूक्ष्म आत्मा का स्वरूप है। यह एक ऐसा सेल है, ऐसी बैटरी है। जैसे घड़ी में छोटी–सी बैटरी डाली जाती है, ऐसे ही यह आत्मा एक ऐसा छोटा–सा अणु रूप सेल है, बिंदु है, जो सारे शरीर रूपी यंत्र को संचालन करता है। इस ज्योतिबिंदु आत्मा की रोशनी इन आँखों से निकलती है। जब तक शरीर रूपी यंत्र में वह आत्मा विराजमान है, आँखों में रोशनी दिखाई पड़ती है; आत्मा निकल जाती है तो आँखें बटन जैसी हो जाती हैं। यह आत्मा इस शरीर में भृकुटि के मध्य निवास करती है। कोई भी जीव–जंतु हो, पशु–पक्षी हो, कोई की पूँछ में निवास नहीं करती। कहाँ निवास करती है? दोनों आँखों के बीच में जो भृकुटि है, भरी–पुरी कुटी है। किसलिए? क्योंकि इस शरीर का राजा आत्मा उस पर विराजमान है; लेकिन यह आत्मा, यह सेल, यह बैटरी 84 जन्मों में डिस्चार्ज हो जाती है। ज़्यादा से ज़्यादा हैं 84 जन्म और मनुष्यों का कम से कम है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर 1 जन्म। तो बताओ, इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर 1 जन्म लेने वाली आत्माओं की संख्या ज़्यादा होगी या 84 जन्म लेने वाली आत्माओं की संख्या ज़्यादा होगी? (किसी ने कहा– 1 जन्म) 1 जन्म लेने वाले बहुत, करोड़ों की तादाद में और 84 जन्म लेने वाले सिर्फ नौ लाख। इसलिए नौ लाख सितारे आसमान में गाए हुए हैं, वे हैं आसमान के जड़ सितारे और ये हैं इस धरती के चैतन्य सितारे। कोई सितारे कम रोशनी देते हैं, कोई सितारे ज़्यादा रोशनी देते हैं। जो ज़्यादा रोशनी देने वाले सितारे हैं वे नवग्रहों के रूप में पूजे जाते हैं। सूर्य को नक्षत्र माना जाता है; वह ग्रहों की गिनती में नहीं है। नक्षत्र माना स्वयं प्रकाशित। उसमें स्वयं ही ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है; उसको ज्ञान देने वाला कोई साकार मनुष्य इस सृष्टि पर नहीं हो सकता। वह गुरुओं का गुरू है, बापों का बाप है, टीचर का टीचर है, सुप्रीम टीचर है। उसको राम कहा जाता है। राम की आत्मा को इस सारी मनुष्य सृष्टि में कोई पढ़ाई नहीं पढ़ा सकता; वह सबको पढ़ाई पढ़ाने वाला है। अगर कोई पढ़ाता है तो वह है निराकार शिव। वह निराकार शिव एक में आता है। गॉड फादर इज़ वन तो गॉड का बच्चा भी वन कहा जाता है। इसलिए वह एकव्यापी बन कर आता है। अज्ञानी मनुष्य गुरुओं ने उसे सर्वव्यापी कह दिया। मेरे में है, तेरे में है, इसमें है, उसमें है, हर तरफ भगवान ही भगवान है। सारी सृष्टि में ढाई हज़ार वर्ष से ढूँढ़ा, कहीं नहीं मिला तो क्या कह दिया? सब जगह मौजूद है। ढूँढ़ने का सवाल ही नहीं। अरे, सर्वव्यापी है तो सारी सृष्टि का कल्याण कैसे करेगा? एकव्यापी बन कर सारी सृष्टि का कल्याण कर सकता है या सर्वव्यापी बन कर कल्याण कर सकता है? (किसी ने कहा– एकव्यापी) वेदों की ऋचाओं में भी लिख दिया है; क्योंकि जिस समय वेद बनाए

गये थे उस समय मनुष्यों की बुद्धि सात्विक थी। उसमें भी लिखा हुआ है कि हे परमपिता! हम पहले तुम्हें सर्वव्यापी नहीं मानते थे; अब सर्वव्यापी मानते हैं। गीता में भी लिखा हुआ है– मैं सूरज, चाँद, सितारों की दुनियाँ से परे पारलोक का रहने वाला हूँ। तो भी सर्वव्यापी कह दिया। अरे, शास्त्र तो अनेक मनुष्य गुरुओं के द्वारा लिखे हुए हैं। **''तुंडे–2 मतिर्भिन्ना'',** एक की बात न मिले दूसरे से। एक ही गीता की सैकड़ों टीकायें कर दीं, सैकड़ों व्याख्यायें कर दीं। एक व्याख्या न मिले दूसरी व्याख्या से। माधवाचार्य की गीता कहती है– आत्माएँ अनेक हैं। शंकराचार्य की गीता कहती है– **एकौ ब्रह्म द्वितीयो नास्ति,** आत्माएँ अनेक नहीं हैं; एक ही ब्रह्म है, वही अनेक रूपों में भासता है। जैसे पानी के बुदबुदे हैं सागर में, वे सागर में मिल जाते हैं। एक ही सागर है। अब क्या सच्चा, क्या झूठा– कौन बताएगा? भगवान ही आकर बताता है– बच्चे, मैं सर्वव्यापी नहीं हूँ। जब सृष्टि का अंतकाल होता है तो मैं आकर अपना परिचय देता हूँ और जब सब मनुष्यात्माओं को मेरा परिचय मिल जाता है, तो सब मेरी याद में लीन हो जाते हैं, लवलीन हो जाते हैं। बाकी मेरे में व्यापक नहीं हैं, तेरे में व्यापक नहीं हैं। वह तो एकव्यापी होकर आता है, तब तो एक को पहचानेंगे। अगर भगवान सर्वव्यापी होकर आए तो भगवान को पहचानेंगे कैसे? पहचान सकेंगे? ढेर सारे भगवान हो गए। कैसे पहचाने? इसलिए भगवान कहते हैं कि मुझे ज्ञानी तू आत्मा विशेष प्रिय है। क्या? भक्त आत्माएँ प्रिय नहीं हैं। भक्त अंधश्रद्धा में आकर आज एक को गुरू मानेंगे, कल दूसरे को मानेंगे, परसों तीसरे को मानेंगे। जो ज्ञानी होगा वह ज्ञान के आधार पर, बुद्धि के आधार पर विश्लेषण करेगा– यह राइट, यह रांग बात और उस पर पक्का हो जाएगा, मजबूत हो जाएगा; हिलेगा नहीं। अब समय आ गया है, सारी सृष्टि को भगवान को पहचानना पड़ेगा। जो पहले–2 पहचान लेगा, मान लेगा, जान लेगा और उसके बताए हुए रास्तों पर चलेगा, वह पाण्डवों की लिस्ट में आ जाएगा। जो जान लेगा कि ये भगवान है, जैसे रावण ने जान लिया था; लेकिन क्या किया? माना नहीं। जान लिया कि ये भगवान है; लेकिन मैं नहीं मानूँगा। मेरे से युद्ध करे। वे कौरवों की लिस्ट के हैं और तीसरे वे हैं, जो जानते भी नहीं, जानना चाहते भी नहीं, मानते भी नहीं और चलने का तो सवाल ही नहीं। जो जानेगा ही नहीं, मानने के लिए भी तैयार नहीं होगा वह चलेगा कैसे? वे हैं यादव। जिनके पेट में से, बुद्धि रूपी पेट में से, शास्त्रों में लिखा हुआ है– लोहे के मूसल निकले। ये मिसाइल्स अभी बन चुके हैं, ये मूसल इनके पेट से निकल चुके हैं, सारी दुनियाँ का ध्वंस कर देंगे। फिर भी भगवान के कार्य में सहयोगी बनते हैं। भगवान जिस मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है उसको टाइटिल देने के निमित्त बनते हैं। क्या टाइटिल मिलता है? हर–2, बम–2। किसका टाइटिल है? शंकर जी का टाइटिल है। राम की आत्मा ही अंतिम जन्म में आकर शंकर का टाइटिलधारी बनती है। इसलिए एक ही देवता महादेव है, 33 करोड़ देवताओं में, जिसका नाम शिव के साथ मिलाया हुआ है। जब शिव का नाम लेंगे तो साथ में किसका नाम लेंगे? शंकर का नाम लेंगे। शिव का नाम विष्णु के साथ नहीं मिलावेंगे, शिव का नाम ब्रह्मा के साथ नहीं मिलावेंगे, शिव का नाम जगदम्बा के साथ नहीं मिलावेंगे, शिव का नाम कोई देवता के साथ नहीं मिलावेंगे। बाप समान बनने वाला इस मनुष्य सृष्टि पर एक ही आत्मा रूपी बच्चा है। कौन? शंकर। इसलिए शिव का नाम शंकर के साथ जोड़ा जाता है; परंतु गलती से मनुष्य गुरुओं ने ऐसा भ्रम फैला दिया कि शिव–शंकर एक ही है। अरे, अगर शंकर एक ही है, शिव एक ही है तो शंकर किसकी याद में बैठा हुआ है? किसकी तपस्या कर रहा है? कोई की तो याद कर रहा है? चढ़े हुए बैठे हैं, किसकी याद में बैठे हैं? कोई है ना? उस शिव की याद में बैठे हैं; इसलिए यादगार मंदिर भी बनाए हुए हैं। पुराने–2 जो शिव के मंदिर हैं, उनमें बीच में शिवलिंग होता है, आजू–बाजू की दीवालों में देवताओं के चित्र लगे हुए हैं, उनमें मुख्य स्थान पर शंकर का चित्र होता है। शंकर साकार है, मनुष्य सब साकार होते हैं, देवतायें सब साकार होते हैं और भगवान निराकार होता है। वह निराकार बाप शिव जब इस मुकर्रर रथ में प्रवेश करता है, तो याद की तीव्रता के आधार पर वह शंकर बच्चा भी निराकार हो जाता है। कोई भी धर्मपिता का चित्र देख लो, जो भी धर्म स्थापन करने वाले पितायें हैं, शिव तो हैं ऊँच ते ऊँच सनातन धर्म की स्थापना करने वाला, ऊँच ते ऊँच धर्मपिता; लेकिन और जो नम्बरवार धर्म हैं और धर्मपितायें हैं, वे भी निराकारी स्टेज वाले हैं। महात्मा बुद्ध का चित्र देखो, चेहरा–दृष्टि को देखने से ही पता लगता है कि ये आत्मा इस दुनियाँ में नहीं है बुद्धि से, उपराम है। क्राइस्ट का चित्र देखो, ध्यान से देखो कभी, निराकारी स्टेज स्पष्ट दिखाई पड़ेगी। गुरूनानक का चेहरा देखो, वह निराकारी स्टेज उस निराकार परं ब्रह्म परमेश्वर को याद करने से उनकी बनी है; लेकिन उन धर्मपिताओं ने ज्ञान ही नहीं लिया। भगवान का ज्ञान एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया। सिर्फ इतना ज्ञान लिया कि मैं आत्मा ज्योतिबिंदु और वह परमपिता परमात्मा ज्योतिबिंदु। बस, याद में बैठ गए। सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान ही नहीं लिया, तो आदि से ले करके अंत तक पार्ट कैसे बजावेंगे! 84 के चक्र में नहीं आते। द्वापरयुग से इस सृष्टि पर आते हैं, जब इस सृष्टि पर द्वैतवाद फैल जाता है। ओम शान्ति।